Dr. Rishi Ranjan
H.D. Jain College (Ara)
Deptt of History
M.A Semester - IV
Paper - 3
Topic - Sindh par Arab Ka Aakraman Ka Karan. - II

हत्या करना अपना पुनीत कर्तव्य मानते थे। अरबों की तरह हिन्दुओं के लिए वैसा कोई प्रेरणा दायक आदर्श नहीं था। वे राष्ट्रीयता का निर्माण नहीं कर सके थे। वे यह नहीं समझ पाये की अरब-आक्रमण उनके धर्म, सांस्कृतिक एवं समाज-व्यवस्था को संकट में डाल देगी। अतः धर्म, संस्कृति एवं सामाजिक व्यवस्था की रक्षा के नाम पर वे संगठित नहीं हो सके। सिन्ध वालों ने अरब आक्रमणकारियों को सीमित राजनीतिक दृष्टिकोण से ही आँका पाया। जिस कारण उसके प्रति संघर्ष नहीं कर पाया।

अयोग्य शासक →

सिन्ध की पराजय के लिए मुख्य रूप से दाहिर स्वयं उत्तरदायी था। उनकी अकर्मण्यता, अयोग्य नेतृत्व और सैनिक भूलें सिन्ध की पराजय का मुख्य कारण बन गयीं। पड़ोस में शक्तिशाली राज्य के उदय के प्रति सिन्ध और पंजाब की सरकार सजग नहीं रही। मकरान-विजय के बाद भी दाहिर की आँखें नहीं खुलीं। उसने बिना प्रतिरोध कर मुहम्मद-बिन-कासिम को एक के बाद दूसरे स्थान को विजय करने का अवसर दिया। रावर-युद्ध के पहले कासिम की सेना बीमारी का शिकार बन चुकी थी और बहुत से घोड़े मर चुके थे। दुर्बल स्थिति से शत्रु को सबल बनाने का अवसर देना दाहिर की सैनिक भूल थी। दाहिर स्वयं बहादुर एवं साहसी नहीं था। वह युद्ध का संचालन और नेतृत्व कुशलता से नहीं कर पाया। स्वयं युद्ध में जान गँवा देने के बदले यदि अपनी सेना के समस्त अंगों को वह व्यवस्थित रखता तो सिन्ध को पराजय का मुह नहीं देखना पड़ता। वस्तुतः दाहिर की मूर्खता के कारण ही सिन्ध की पराजय हुयी।

लक्ष्यहीन संग्राम

दाहिर की तुलना में मुहम्मद-बिन-कासिम का उत्साह, सैनिक नेतृत्व एवं योग्यता अधिक सफल रही। लक्ष्य पूर्ति के लिए अरबों में जोश और साहस था। वे कट्टर धार्मिक भावना से युद्ध में लड़ रहे थे। दूसरी ओर भारतीय सैनिक बहादुर रहते हुए भी किसी निश्चित लक्ष्य को सामने रखकर युद्ध नहीं किए थे। यही कारण है कि अरबों को युद्ध में सफलता मिली और सिन्ध को पराजय का मुह देखना पड़ा।

[illegible]

सिंध के लोग अत्यधिक अंधविश्वासी थे। वो लोग मूर्तिपूजक थे और उनके [illegible] देव की रक्षा में ही अपनी रक्षा समझते थे। वो लोग वीरता से बढ़कर पूजा को ही ज्यादा महत्व देते थे। उनकी प्रवृति आध्यात्मवाद की ओर अधिक थी इसलिए भौतिक विजय की ओर उनका ध्यान नहीं था जिसकी वजह से उनका पतन हुआ।

दूसरी ओर अरब के लोगो की प्रवृति भौतिकवादी थी। भारतीयों को अपने धर्म में परिवर्तित करना उनका पवित्र कर्तव्य था। इस कार्य के लिए वे अपनी जान तक दे सकते थे लेकिन हिन्दुओं में ऐसा कोई गुण नहीं था।

सिंध की राजनीतिक स्थिति :-

जिस समय सिंध पर अरबों का आक्रमण हुआ उस समय सिंध की राजनीतिक दशा अत्यंत खराब थी। सारे देश में राजनीतिक एकता का कहीं नामोनिशान नहीं था। सम्पूर्ण सिंध अनेक छोटे-2 राज्यो में बंटा हुआ था। सभी राज्यों ने मिलकर अरबों से लड़ने की कोशिश नहीं की और इस प्रकार सिंध के लोगों को पराजय का मुँह देखना पड़ा।

निष्कर्ष

सिंध पर अरबो का आक्रमण हुआ उनकी विजय भी हुई। इसके कई कारण थे लेकिन फिर भी मुख्य रूप से यह कहा जा सकता है कि राजाओ की अयोग्यता तथा राजनीतिक एकता की कमी मुख्य कारण बनी। अरबों के सफलता का साथ ही साथ राजा से क्षुब्ध प्रजा ने भी अपने ही देश की गुप्त बातें को दुश्मनो को बताकर उनके जीत को और आसान बना दिया।

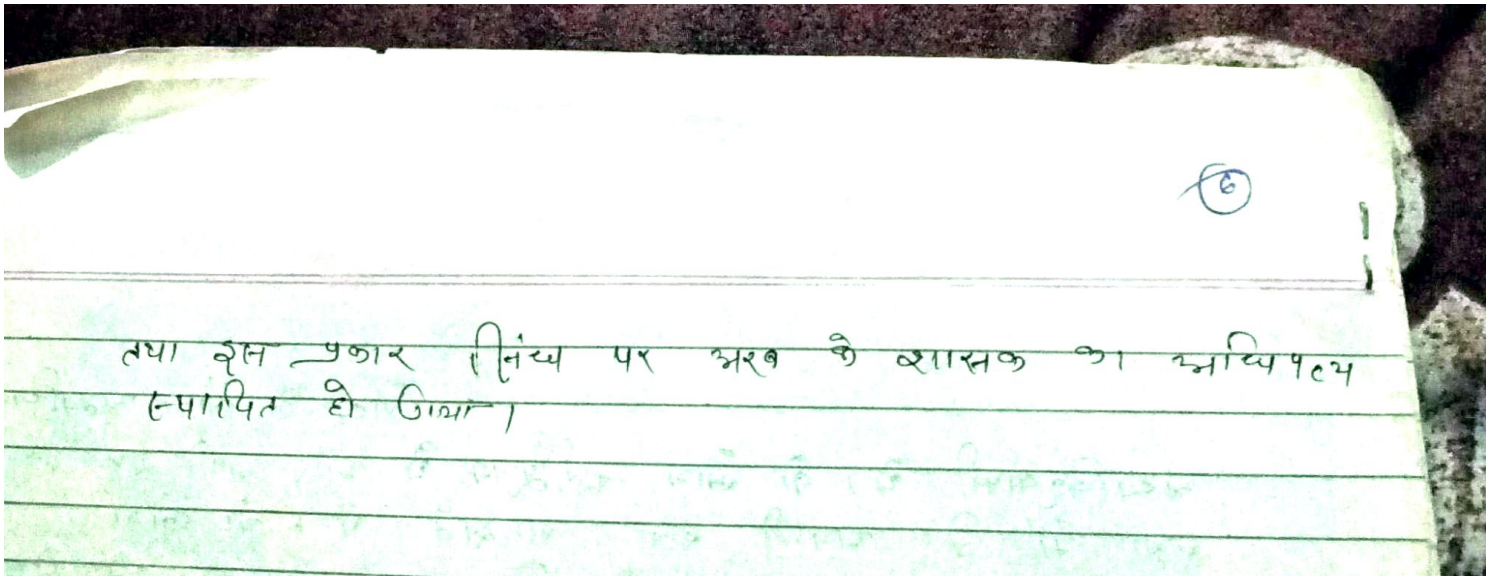
6
तथा इस प्रकार सिंध पर अरब के शासक का अधिपत्य
स्थापित हो गया।